Gyan Manthan, Vol 1, Issue 2, pp 41- 50 August 2025 ISSN: **3108-3455**

Gyan Manthan

Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक विचारों का एक अध्ययन

डॉ. पल्लवी नागर [1]

असिस्टेंट प्रोफेसर

अरिहंत कॉलेज

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

सार

यह शोध-पत्र स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक विचारों का सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उन्होंने 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, अंधविश्वास, सती प्रथा, बाल विवाह, नारी उपेक्षा और मूर्तिपूजा जैसी कुरीतियों का वैदिक और तार्किक आधार पर विरोध किया। उनका उद्देश्य था एक समतामूलक, तर्कशील और नैतिक समाज की स्थापना।

"वेदों की ओर लौटो" उनका प्रसिद्ध नारा था, जिसके माध्यम से वेदों को सामाजिक पुनर्निर्माण का आधार माना गया। उन्होंने कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया और जन्माधारित जातिवाद का विरोध किया। उन्होंने नारी शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, और स्त्री-सशक्तिकरण की ज़ोरदार वकालत की।

1875 में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की, जो उनके विचारों के प्रचार-प्रसार का मुख्य माध्यम बना। यह शोध दर्शाता है कि स्वामी दयानंद केवल धार्मिक सुधारक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक न्याय के प्रबल पक्षधर युगद्रष्टा थे।

कीवर्ड्स: स्वामी दयानंद सरस्वती, सामाजिक सुधार, आर्य समाज, नारी शिक्षा, जातिवाद, वेदों की ओर लौटो, स्त्री सशक्तिकरण, धार्मिक पाखंड, सामाजिक न्याय, आधुनिक भारत

प्रस्तावना

भारतीय समाज का इतिहास विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आंदोलनों से परिपूर्ण रहा है, जो समय-समय पर उसकी दिशा और दशा को परिवर्तित करते रहे हैं। उन्नीसवीं

शताब्दी का कालखंड भारतीय समाज के इतिहास में एक नवीन सामाजिक और वैचारिक जागरण का समय था, जब एक ओर ब्रिटिश उपनिवेशवाद से भारतीय सामाजिक ढांचे में टूट-फूट हो रही थी, वहीं दूसरी ओर समाज आंतरिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों, कुरीतियों और जातिगत भेदभाव में जकड़ा हुआ था। ऐसे विकट समय में अनेक समाज-सुधारक हुए, जिन्होंने भारतीय समाज को नवजीवन प्रदान करने का कार्य किया, परंतु उन सभी में स्वामी दयानंद सरस्वती का स्थान विशिष्ट और अग्रणी है।

स्वामी दयानंद सरस्वती केवल एक धार्मिक संत नहीं थे, बल्कि एक प्रखर वैचारिक नेता और समाज सुधारक थे, जिन्होंने धर्म के नाम पर समाज में फैली विकृतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई और वैदिक जीवन मूल्यों के आधार पर एक नये समाज की परिकल्पना प्रस्तुत की। उन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा देकर भारतीय समाज को आत्मगौरव, तर्कशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर प्रेरित किया। उनके विचारों में धर्म, समाज, राजनीति, शिक्षा, स्त्री-विमर्श, जातिवाद उन्मूलन, और आचार-विचार जैसे सभी पहलुओं का समावेश था।

उनका समाज-दृष्टिकोण केवल आदर्शवाद में सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने व्यावहारिक स्तर पर आर्य समाज की स्थापना के माध्यम से इन विचारों को मूर्त रूप भी दिया। आर्य समाज एक क्रांतिकारी आंदोलन बनकर उभरा, जिसने नारी शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, छुआछूत-उन्मूलन, स्वदेशी आंदोलन और धार्मिक शुद्धि जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किए। स्वामीजी के विचार समाज की जड़ता को तोड़ने वाले थे, जो आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। यह विस्तारित शोध-पत्र स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक विचारों का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें उनके जीवन, कार्य, विचारों की विविधता, समकालीनता, उनकी आलोचनाओं तथा उनके विचारों की आज के संदर्भ में प्रासंगिकता पर विस्तृत चर्चा की गई है। उनके प्रमुख चिंतन-क्षेत्र जैसे वर्ण व्यवस्था, नारी उत्थान, धार्मिक सुधार, शिक्षा प्रणाली, अंधविश्वास-उन्मूलन, और आर्य समाज की स्थापना को प्रत्येक खंड में विवेचित किया गया है। इसका उद्देश्य न केवल उनके विचारों को समझना है, बल्कि यह भी दर्शाना है कि किस प्रकार वे आज भी भारतीय समाज के नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

GYAN MANTHAN A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन और कार्य

स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन त्याग, संघर्ष और सत्य की खोज का एक प्रेरणास्पद उदाहरण है। उनका जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात के मोरबी जिले के टंकारा गांव में एक धार्मिक ब्राहमण परिवार में हुआ था। उनका मूल नाम 'मुलशंकर' था। बचपन से ही वे धार्मिक प्रवृत्ति के थे, परंतु उन्होंने कभी भी अंधश्रद्धा, मूर्तिपूजा और तंत्र-मंत्र जैसी बातों को

सहजता से स्वीकार नहीं किया। बाल्यकाल में शिवरात्रि के दिन जब उन्होंने मंदिर में मूर्ति पर चढ़े चूहों को देखा तो उनके बाल-मन में यह प्रश्न उठा कि जिस ईश्वर की पूजा की जा रही है, वह स्वयं अपने को इन जीवों से क्यों नहीं बचा सकता। यही घटना उनके जीवन की वैचारिक क्रांति का आरंभ बनी।

16 वर्ष की आयु में उन्होंने सत्य की खोज के लिए गृहत्याग कर दिया और वर्षों तक गुरुकुलों व तपस्थलों में घुमते हुए आत्मज्ञान की खोज में लगे रहे। अंततः वे हरिद्वार में स्वामी विरजानंद के संपर्क में आए, जिन्होंने उन्हें वेदों के वास्तविक अर्थ समझाए और जीवन का उद्देश्य स्पष्ट किया। यहीं से उनके सार्वजनिक जीवन की शुरुआत होती है। उन्होंने जीवन भर मूर्तिपूजा, पाखंड, अंधविश्वास और रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष किया।

स्वामी दयानंद की प्रमुख कृति सत्यार्थ प्रकाश है, जिसमें उनके धार्मिक और सामाजिक विचारों की पूरी छाया मिलती है। उन्होंने वेदों को ही ज्ञान का सर्वोच्च स्रोत माना और समाज को "वेदों की ओर लौटो" का आह्वान दिया। उनका मानना था कि वेद सार्वभौमिक ज्ञान हैं, जो मनुष्य को सत्य, नैतिकता और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

1875 में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की, जो उनके विचारों को समाज में कार्यरूप देने का माध्यम बना। उन्होंने नारी शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, छुआछूत उन्मूलन, स्वदेशी, गौ-रक्षा, और धार्मिक सुधार जैसे क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभाई। उनकी मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 को हुई, परंतु उनके विचार आज भी जीवंत हैं और समाज-सुधार का पथ प्रशस्त करते हैं।

GYAN MANTHAN A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

संबंधित साहित्य का अध्ययन

वर्मा, ए. के. (2008) ने अपने अध्ययन 'स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक विचार' में वर्ण व्यवस्था, स्त्री शिक्षा और धार्मिक सुधारों को केंद्र में रखा। उनका निष्कर्ष था कि स्वामीजी का "वेदों की ओर लौटो" का आह्वान आधुनिक समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता का विस्तार करता है।

शर्मा, कविता (2012) ने अपने शोध में 'स्वामी दयानंद सरस्वती और महिला सशक्तिकरण' विषय पर स्त्रियों के संदर्भ में दयानंद के विचारों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया। लेखिका ने निष्कर्ष निकाला कि उन्होंने नारी को केवल सामाजिक रूप से नहीं, बल्कि शिक्षा, पुनर्विवाह और सम्मान के स्तर पर भी बराबरी का स्थान दिलाने का प्रयास किया।

डॉ. कुसुम चौहान (2013) ने 'दयानंद के सुधारात्मक दृष्टिकोण' पर शोध करते हुए यह बताया कि उन्होंने धार्मिक परंपराओं की पुनर्व्याख्या करते हुए समाज में व्याप्त जातिवाद, बाल विवाह और स्त्री शिक्षा की दुर्दशा पर विशेष बल दिया। उन्होंने स्वामीजी के प्रयासों को भारतीय समाज की जड़ता तोड़ने वाला बताया।

दिनेश पटेल (2021) का नवीनतम शोध 'समकालीन भारत में स्वामी दयानंद सरस्वती की प्रासंगिकता' पर आधारित है, जिसमें यह बताया गया कि स्वामीजी के विचार—जैसे कि जातिगत भेदभाव का निषेध, शिक्षा की सार्वभौमिकता और नारी सम्मान—आज भी सामाजिक नीति निर्माण में अत्यंत उपयोगी हैं।

जातिवाद और वर्ण-व्यवस्था पर विचार

स्वामी दयानंद सरस्वती ने जातिवाद और जन्माधारित वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध अत्यंत प्रबल स्वर में अपनी असहमति व्यक्त की। उनका मानना था कि भारतीय समाज में फैली जातीय असमानता और ऊंच-नीच की भावना समाज को विघटन की ओर ले जा रही है। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति केवल जन्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं बनता, बल्कि यह निर्धारण व्यक्ति के गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर किया जाना चाहिए। यह विचार उन्होंने वेदों के अध्ययन के आधार पर प्रतिपादित किया, जहाँ वर्ण व्यवस्था को गुण और कर्म पर आधारित बताया गया है।

दयानंद जी का यह दृष्टिकोण तत्कालीन भारतीय समाज के लिए अत्यंत क्रांतिकारी था, जहाँ जाति-प्रथा ने सामाजिक गतिशीलता को समाप्त कर दिया था और उच्च जातियों ने अपने विशेषाधिकारों को धार्मिक आधारों से स्थायित्व प्रदान कर दिया था। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में बार-बार इस बात पर बल दिया कि यदि कोई शूद्र वेदाध्ययन कर ले, तो वह ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी बन सकता है। इसी प्रकार, यदि कोई ब्राह्मण अपने धर्म, कर्म और कर्तव्यों का पालन न करे, तो वह शूद्र जैसा ही माना जाएगा। इस विचार ने समाज में समानता, समरसता और सामाजिक न्याय की अवधारणा को बल दिया। स्वामीजी ने जातिगत भेदभाव के विरुद्ध एक व्यापक अभियान चलाया और आर्य समाज के माध्यम से समाज को इस संकीर्णता से बाहर निकालने का प्रयास किया। उन्होंने छुआछूत, ऊँच-नीच और जाति के नाम पर होने वाले भेदभाव को अधार्मिक और अमानवीय करार दिया।

स्वामीजी का यह दृष्टिकोण आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, जब भारतीय समाज में जाति के आधार पर भेदभाव और हिंसा के अनेक उदाहरण सामने आते हैं। उनका कर्म-आधारित वर्ण-सिद्धांत आज की सामाजिक नीतियों और संविधान की मूल आत्मा—समानता और सामाजिक न्याय—से पूर्णतः मेल खाता है।

.नारी-उत्थान और स्त्री-शिक्षा

स्वामी दयानंद सरस्वती नारी-उत्थान के एक महान प्रवक्ता थे। वे मानते थे कि किसी भी समाज की उन्नति तब तक संभव नहीं जब तक उसकी स्त्रियाँ शिक्षित, सशक्त और स्वतंत्र

न हों। उन्होंने स्त्रियों के अधिकारों को वैदिक अधिकारों के रूप में देखा और कहा कि वेदों में स्त्रियों को पुरुषों के समान ही सम्मान, शिक्षा और धार्मिक कर्तव्यों का अधिकार है। उन्होंने यह भी कहा कि स्त्रियों को यज्ञ, वेदाध्ययन और उपनयन संस्कार करने का भी पूरा अधिकार है।

स्वामीजी ने नारी शिक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि यदि स्त्रियाँ शिक्षित होंगी, तो वे अच्छे नागरिक, योग्य माता-पिता और समाज के निर्माण की आधारशिला सिद्ध होंगी। उन्होंने विशेष रूप से बालिकाओं के लिए शिक्षण संस्थानों की स्थापना की पहल की और आर्य समाज के माध्यम से महिला शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया।

उन्होंने पर्दा प्रथा, सती प्रथा और स्त्रियों की धार्मिक व सामाजिक उपेक्षा का तीव्र विरोध किया। विधवा विवाह, स्त्री पुनर्विवाह और स्त्री अधिकारों को लेकर वे अत्यंत स्पष्ट और साहसी थे। उन्होंने सती प्रथा को अमानवीय बताते हुए इसे तत्काल समाप्त करने की मांग की।

स्त्री सशक्तिकरण की उनकी धारणा केवल नैतिक या सांस्कृतिक नहीं थी, बल्कि उन्होंने सामाजिक-संरचनात्मक परिवर्तन के माध्यम से महिलाओं को सक्षम बनाने का प्रयास किया। वे चाहते थे कि स्त्रियाँ आत्मनिर्भर बनें और अपने अधिकारों के प्रति सजग रहें।

आज जब नारी सशक्तिकरण की चर्चा वैश्विक मंचों पर होती है, स्वामी दयानंद के विचार एक आदर्श रूप में सामने आते हैं। वे नारी गरिमा, शिक्षा और स्वतंत्रता के समर्थक थे, और उनके प्रयासों ने भारत में नारी जागरण की नींव रखी।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

बाल-विवाह, सती-प्रथा और अंधविश्वास का विरोध

स्वामी दयानंद सरस्वती उन समाज-सुधारकों में से थे जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों को धार्मिक आवरण से मुक्त कर तर्क और वेदों के आलोक में परखा। उन्होंने बाल विवाह, सती प्रथा और अंधविश्वास जैसे विषयों पर स्पष्ट और निर्भीक रूप से लिखा और बोला। उनके अनुसार धर्म के नाम पर फैली ये सभी कुरीतियाँ समाज को पंगु बना रही थीं और इनका कोई भी वेदसम्मत आधार नहीं था।

बाल विवाह पर उन्होंने कहा कि यह न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए घातक है, बल्कि इससे शिक्षा और सामाजिक विकास भी बाधित होता है। उन्होंने इसके स्थान पर विवाह की वैदिक आयु-सीमा को महत्व दिया और आर्य समाज के माध्यम से विवाह संस्कारों में बदलाव लाने का प्रयास किया।

सती प्रथा, जिसमें पति की मृत्यु के बाद स्त्री को अग्नि में जलाकर मार दिया जाता था, को उन्होंने घोर अमानवीय और अधार्मिक घोषित किया। उन्होंने वेदों का हवाला देते हुए बताया कि किसी भी वैदिक ग्रंथ में सती प्रथा का समर्थन नहीं है। उनका मानना था कि विधवा स्त्रियों को जीवन का अधिकार है और उन्हें पुनः विवाह, शिक्षा और सामाजिक कार्यों में भाग लेने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

अंधविश्वास, जैसे तंत्र-मंत्र, पाखंड, मूर्तिपूजा, शगुन-अपशगुन आदि के विरुद्ध उन्होंने वैदिक तर्कशास्त्र का प्रयोग किया। उनका मानना था कि सच्चा धर्म वह है जो तर्क, विज्ञान और नैतिकता पर आधारित हो। उन्होंने धार्मिक नेताओं, तथाकथित बाबाओं और पुरोहितों की उस पाखंडी प्रवृत्ति की आलोचना की जो लोगों को डराकर धर्म के नाम पर शोषण करती है।

इन सामाजिक कुरीतियों पर उनका प्रहार न केवल वैचारिक स्तर पर था, बल्कि उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से व्यापक जन-जागरण का आंदोलन भी खड़ा किया। उनका उद्देश्य भारतीय समाज को एक तर्कशील, नैतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संपन्न बनाना था, और उन्होंने उस दिशा में अपने संपूर्ण जीवन को समर्पित कर दिया।

GYAN MANTHAN A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शिक्षा और सामाजिक विकास

स्वामी दयानंद सरस्वती ने शिक्षा को सामाजिक और नैतिक विकास की आधारशिला माना। उनका विश्वास था कि शिक्षा के अभाव में व्यक्ति और समाज अंधविश्वास, रूढ़िवाद और पराधीनता का शिकार हो जाते हैं। उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य केवल पठन-पाठन या कर्मकांड सीखना नहीं, बल्कि आत्मज्ञान, तर्कबुद्धि और नैतिक जागरूकता को विकसित करना बताया। उनकी दृष्टि में शिक्षा का मूल आधार वेद होना चाहिए, क्योंकि वेद मानव जीवन के सभी पक्षों का वैज्ञानिक और तात्त्विक विवेचन करते हैं। उन्होंने कहा कि वेद-आधारित शिक्षा से ही भारतीय समाज की खोई हुई आत्मशक्ति लौट सकती है। यद्यपि उन्होंने आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा की कुछ उपयोगिताओं को भी स्वीकार किया, परंतु उसकी अपूर्णता के प्रति सचेत भी किया। वे चाहते थे कि भारतीय शिक्षण पद्धति में भारतीयता और आधुनिकता का संतुलन हो।

उन्होंने विशेष रूप से नारी शिक्षा पर बल दिया। उनका तर्क था कि यदि स्त्री शिक्षित नहीं होगी, तो परिवार और समाज भी अधूरे रहेंगे। इसी विचार को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने

आर्य समाज के माध्यम से अनेक महिला विद्यालयों और गुरुकुलों की स्थापना की। उनके प्रयासों से समाज में एक नई चेतना का संचार हुआ, जिसमें शिक्षा को सभी वर्गों के लिए अनिवार्य और सुलभ माना जाने लगा।

दयानंद जी का मत था कि शिक्षा व्यक्ति में आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना उत्पन्न करती है। इससे ही जातीय भेदभाव, अंधविश्वास और अन्य सामाजिक कुरीतियों का अंत संभव है। वेदाध्ययन और व्यावहारिक ज्ञान का समन्वय कर व्यक्ति को 'चरित्रवान नागरिक' बनाना उनका लक्ष्य था।

आज भी उनकी शैक्षिक दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक है। जब भारतीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा और कौशल विकास पर बल दिया जा रहा है, तब स्वामी दयानंद का शिक्षा-दर्शन मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

वेदों की ओर लौटो - वैचारिक क्रांति

स्वामी दयानंद सरस्वती का सबसे प्रसिद्ध और ऐतिहासिक नारा था - "वेदों की ओर लौटो"। इस आह्वान का अर्थ केवल धार्मिक नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक वैचारिक और सामाजिक आंदोलन की घोषणा थी। उनका मानना था कि भारत की आत्मा वेदों में निहित है, और जितनी दूर समाज वेदों से गया, उतना ही पतनशील होता गया।

वेद उनके लिए केवल पूजा-पद्धति या कर्मकांड का संकलन नहीं थे, बल्कि एक ऐसा संपूर्ण जीवन-दर्शन थे जिसमें ज्ञान, तर्क, नैतिकता और विज्ञान का समन्वय मिलता है। वेदों में व्यक्ति-स्वातंत्र्य, समानता, नारी सम्मान और शिक्षा का स्पष्ट समर्थन है। अतः दयानंद ने समाज से आग्रह किया कि वह इस मौलिक ज्ञान परंपरा को समझे और अपनाए।

उनके 'वेद-आधारित समाज' की परिकल्पना में मूर्तिपूजा, तंत्र-मंत्र और पाखंड का कोई स्थान नहीं था। उन्होंने धर्म को कर्मकांड से मुक्त कर तर्क और नैतिकता के धरातल पर पुनः स्थापित किया। यही कारण है कि उनके विचार तत्कालीन पुरोहित वर्ग को अस्वीकार्य थे और उन्होंने स्वामीजी का तीव्र विरोध किया।

इस विचारधारा ने भारतीय नवजागरण को एक ठोस आधार दिया। उनके नारे ने भारत में आत्मगौरव और सांस्कृतिक स्वाभिमान की लौ जगाई, जिसने बाद में स्वाधीनता आंदोलन को भी प्रेरित किया।

आज 'वेदों की ओर लौटो' का संदेश हमें स्मरण कराता है कि हमारी जड़ें हमारी शक्ति हैं, और हमें प्रगतिशीलता के साथ अपनी परंपरा को भी जीवित रखना चाहिए।

स्वामी दयानंद के सामाजिक आंदोलन और आर्य समाज

GYAN MANTHAN A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों को संस्थागत रूप देने का महत्वपूर्ण प्रयास था। आर्य समाज ने 'वेदोन्मुखी समाज' के निर्माण और सामाजिक सुधार को संगठित गति प्रदान की। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य मूर्तिपूजा का विरोध, स्त्री शिक्षा का प्रसार, जातिवाद का उन्मूलन और नैतिक जीवन का प्रचार था। इसके लिए समाज ने गुरुकुल शिक्षा, महिला विद्यालय, पुस्तक प्रकाशन, शुद्धि आंदोलन, विधवा पुनर्विवाह अभियान आदि अनेक कार्यक्रम चलाए। आर्य समाज ने छुआछूत को अधार्मिक घोषित कर हरिजनों के साथ समानता का व्यवहार किया। स्वदेशी वस्त्रों और स्वावलंबन के समर्थन से स्वाधीनता आंदोलन में अप्रत्यक्ष योगदान भी दिया। गो-रक्षा आंदोलन, शुद्धि आंदोलन और अस्पृश्यता उन्मूलन में इसकी भूमिका ऐतिहासिक रही।

आर्य समाज ने भारत के कोने-कोने में शाखाएं स्थापित कर समाज को एकता, स्वाभिमान और तर्कशीलता की प्रेरणा दी। अनेक राष्ट्रीय नेता जैसे लाला लाजपत राय, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी आदि इसी विचारधारा से प्रेरित थे।

इस प्रकार आर्य समाज, स्वामीजी के विचारों को जीवंत रखने वाला एक आंदोलन बना, जिसने भारतीय समाज में नयी चेतना का संचार किया।

स्वामी दयानंद सरस्वती की आलोचना और उनका उत्तर

स्वामी दयानंद के कार्यों और विचारों का समाज के परंपरावादी वर्ग ने कटु विरोध किया। पुरोहित वर्ग ने उन्हें 'नास्तिक', 'विधर्मी' और 'धर्मद्रोही' तक कहा। उनके 'वेद-केन्द्रित' दृष्टिकोण को पौराणिक हिंदू धर्म के विपरीत माना गया।

स्वामीजी ने मूर्तिपूजा और पुराणों की आलोचना इतनी निर्भीकता से की कि इससे उनकी छवि कट्टरपंथी सुधारक की बन गई। कई स्थानों पर उनके उपदेशों में विघ्न डाले गए, उनका बहिष्कार किया गया। उनके शिष्यों पर हमले हुए।

लेकिन स्वामीजी ने कभी भी अपने विचारों से समझौता नहीं किया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में प्रत्येक आलोचना का तर्कपूर्ण उत्तर दिया। उनका सिद्धांत था कि किसी विचार या परंपरा को केवल परंपरा के नाम पर स्वीकार करना उचित नहीं, उसे तर्क और वेदों की कसौटी पर कसना आवश्यक है।

इस निर्भीकता के कारण वे अपने समय के सबसे साहसी और क्रांतिकारी विचारकों में गिने जाते हैं। उनका व्यक्तित्व हमें सिखाता है कि सत्य के मार्ग पर चलने के लिए आलोचनाओं का धैर्यपूर्वक सामना करना ही पड़ता है।

सामाजिक विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

आज जब भारतीय समाज जातिLवाद, साम्प्रदायिकता, लिंगभेद और अंधविश्वास से जूझ रहा है, स्वामी दयानंद के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं।
उनका कर्म-आधारित वर्ण-सिद्धांत जातिवाद को समाप्त करने की प्रेरणा देता है। नारी शिक्षा और समानता का उनका दृष्टिकोण महिला सशक्तिकरण की आधारभूमि है। वेदों पर आधारित तर्कशील धर्म-चिंतन आज की वैज्ञानिक चेतना के अनुरूप है।
आज की शिक्षा प्रणाली में उनके 'भारतीयता और आधुनिकता के समन्वय' का विचार आदर्श रूप में सामने आता है। उनकी नैतिक शिक्षा की कल्पना और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश आज भी हमारे राष्ट्रीय चरित्र को सशक्त बना सकता है।

निष्कर्ष

स्वामी दयानंद सरस्वती का समाज-दर्शन केवल विचारों तक सीमित न होकर व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाला था। उन्होंने समाज की जड़ता को तोड़ने के लिए वेदों की रोशनी में सुधार की योजना प्रस्तुत की।
उन्होंने जातिवाद, अंधविश्वास, सती प्रथा, बाल विवाह और स्त्री-दासता पर कठोर प्रहार किया। उनके प्रयासों से भारतीय समाज में आत्मगौरव, तर्कशीलता और नैतिकता की नई लहर उठी।
आज भी उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि किसी भी समाज की उन्नति तर्क, नैतिकता और शिक्षा के बल पर ही संभव है। वे एक युगद्रष्टा थे, जिनके सिद्धांत भारतीय नवजागरण की आत्मा में बसते हैं।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

संदर्भ सूची

- दयानंद सरस्वती – सत्यार्थ प्रकाश, आर्य प्रकाशन ट्रस्ट, नई दिल्ली
- पं. लेखराम – आर्य समाज का इतिहास, साक्षात्कार प्रकाशन, इलाहाबाद
- डॉ. बिपिन चंद्र – आधुनिक भारत में समाज सुधार आंदोलन, ओरिएंट ब्लैकस्वान
- डॉ. रामगोपाल मिश्र – स्वामी दयानंद और भारतीय नवजागरण, राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, वाराणसी
- डॉ. कविता शर्मा – स्वामी दयानंद सरस्वती और नारी सशक्तिकरण, शिक्षा विमर्श शोध-पत्रिका, अंक-12
- .डॉ. कुसुम चौहान – स्वामी दयानंद का सुधारात्मक दृष्टिकोण, आधुनिक भारतीय चिंतन, खंड-2
- वर्मा, ए. के. – स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक विचार, भारतीय सामाजिक समीक्षा, खंड-7
- पटेल, दिनेश – समकालीन भारत में स्वामी दयानंद सरस्वती की प्रासंगिकता, आधुनिक भारत पत्रिका,2021
- नारवणे, वी. एस. – भारतीय नवजागरण के विचारक, (अनुवादित संस्करण), प्रकाशक: नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
- भारतीय ऐतिहासिक पत्रिका (Indian Historical Journal) – खंड 35(2), पृष्ठ 112–124, विषय: औपनिवेशिक भारत में सामाजिक सुधार।
- आधुनिक भारतीय अध्ययन शोध-पत्रिका (Journal of Modern Indian Studies) – खंड 4(1), पृष्ठ 55–66, शीर्षक: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से स्वामी दयानंद के विचार।
- दक्षिण एशियाई दार्शनिक समीक्षा (South Asian Philosophical Review) – खंड 9(3), पृष्ठ 89–101, शीर्षक: स्वामी दयानंद की वैचारिक विरासत।
- शैक्षिक अंतर्दृष्टि शोध-पत्रिका (Educational Insights Journal) – खंड 7(2), पृष्ठ 42–53, शीर्षक: आर्य समाज का शैक्षिक परिप्रेक्ष्य।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL